Title: Need to allow Tibetan refugees to sell woollen garments for their livelihood.

श्री मोहन सिंह (देवरिया): सभापति महोदय, सम्पूर्ण भारत के विभिन्न हिस्सों में विगत १९५९ से तिब्बती शरणार्थी रहते आये हैं। जाड़े के दिनों में ऊनी वस्त्र, स्वेटर, पुलोवर, कम्बल, चादरें बुनकर देश के प्रमुख शहरों के प्रमुख चौराहों पर सस्ती कीमत पर आम लोगों को बेचकर अपना जीविकोपार्जन करते हैं। इधर कलकत्ता, लखनऊ और अन्य प्रमुख नगरों की नगर महापालिकाओं ने इनको सार्वजनिक स्थानों से भगा दिया, जिससे इनके सामने भुखमरी की समस्या खड़ी हो गई है। भारत सरकार ने अपनी तरफ से भारत में लम्बे समय से शरणार्थी के रूप में रहने वाले तिब्बतियों को अपना अतिथि मानकर उनकी व्यवस्था करने का आश्वासन दिया, किन्तु कई राज्यों में इनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जा रहा है।

भारत सरकार सभी राज्य सरकारों को इस बात का निर्देश दे कि तिब्बती भाई नगर के प्रमुख मार्गों पर यदि एक दो माह अपनी जीविका चलाने के लिए ऊनी वस्त्रों की बिक्री करते हैं तो उनके साथ सहयोग किया जाये, उनके लिए सीमित समय के लिए कोई स्थान निश्चित कर दिया जाये, जिससे भारत की जनता को सस्ते में ऊनी वस्त्र उपलब्ध हो सकें।